केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : Hindi Core

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Thursday 13/3/14

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाए
Write Code No. as written on the top of Question Paper : 2/1

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of Supplementary answer-book(s) used

किसी शारीरिक अक्षमता के प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If Physically challenged, tick the category

B D H S C

B = दृष्टिहीन, D = मूक एवं बधिर, H = शारीरिक रुप से विकलांग, S = स्पस्टिक, C = डिस्लेक्सिक
B = Blind, D = Deaf & Dumb, H = Physically Handicapped, S = Spastic, C = Dyslexic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No — No.

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

CORE

I

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

Central Board of Secondary Education, Delhi

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)

SENIOR SCHOOL CERTIFICATE EXAMINATION (CLASS XII)

प्रमाणित किया जाता है मैने/हमने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन प्रश्न पत्र के समुचित सेट के अनुसार और पूर्ण रूप से मूल्यांकन पद्धति के अनुसार किया है।

Certified that I/We have evaluated this answer-book according to the correct set of question paper and strictly as per the marking scheme.

उत्तर 4) → ऐन फ्रैंक ने महिलाओं के विकास के लिए अपना समर्थन दिया है। उन्होंने महिलाओं पर हो रहे विराट अन्याय पर प्रश्न उठाया है। ऐन फ्रैंक के अनुसार प्राचीन काल से ही पुरुष ने महिला पर शासन करना इसलिए आरंभ किया क्योंकि वह शारीरिक रुप से ज्यादा सक्षम थे। पुरुष ही कमाकर लाता है, बच्चे पालता - पोसता है और इसलिए जो मन में आया करता है। औरतें इन अत्याचारों को सहती चली आ रही थी जो सबसे बड़ी बेवकूफी थी। औरतों पर जो घोर अन्याय की प्रथा चल रही थी; वह गहराई से अपनी जड़ें जमाती चली गई।

→ पुरुषों को अधिक महत्व और सम्मान दिया जाता है लेकिन महिलाओं को उनके हक में निहित सम्मान से वंचित रखा जाता है। पुरुष को पूजा जाता है; युद्ध के वीरों और सिपाहियों को अमर बना डालने की चेष्ठा रखते हैं पर औरतों को सिर्फ और सिर्फ मूल्यहीन और तुच्छ माना जाता है।

→ ऐन फ्रैंक के अनुसार युद्ध के वीर जो यंत्रणा, तकलीफें, बिमारियों से गुज़रना पड़ता है; उससे अधिक तकलीफ़ औरतों को बच्चों को जन्म देते वक्त झेलना पड़ता है। स्त्री ही है जो मानव जाति की निरंतरता को बनाए रखती है; लेकिन बच्चा जनने के बाद स्त्री जब अपना आकर्षण खो देता है; तो उसे एक तरफ़ धकिया दिया जाता है। उसकी ज़िंदगी में पग-पग पर काँटे बिछे हुए हैं।

→ लेकिन वर्तमान युग में भारतीय नारी स्वतंत्र रहना चाहती है। शिक्षा, काम तथा प्रगति ने औरतों की आँखें खोली हैं। वह आज हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कदम मिला रही है। सोनिया गाँधी, प्रतिभा पाटील, साइना नेहवाल, ऐश्वर्या राय और सुषमा स्वराज और न जाने कितने ऐसे अनगिनत महिलाएँ जो राजनीति, विज्ञान, खेल, चिकित्सा के क्षेत्र में अपने प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही है। तालिबान आतंकवादियों के शिकार बनी मलाला युसफ़ज़ाय ने लड़कियों के पढ़ने के अधिकार को महत्व दिया

और यहाँ तक की अपनी जान की परवाह भी किए बिना डटकर मुकाबला किया।

लेकिन महिलाओं के इतने प्रगति के बावजूद आज भी कही स्थानों पर महिलाएं अपने हक से वंचित है; वह आज भी दहेज प्रथा, बाल, विवाह, आदि अभिशापों के चक्रव्यूह में पड़े हैं। अंधविश्वास और रुढ़ीग्रस्त भावनाओं के बीच वह अपने अधिकारों के लिए लड़ भी नहीं पाते। महिला तो कोमलता, ममता, समर्पण का परिचायक है। लेकिन आज का पथभ्रष्ट समाज में महिलाओं के लिए हर दिन एक अग्निपरीक्षा है। शारीरिक रूप से कमजोर मानकर उन्हें अनेक अत्याचारों का सहन करना पड़ रहा है; बलात्कार, अपहरण, यह सब तो जीवन संगी हो गए हैं।

लेकिन एक राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब उसकी महिलाओं का सम्मान किया जाए; उनकी सुरक्षा की जाए। क्योंकि महिला देवी के समान है। तभी तो मंदिर में भी घंटी बजाते वक्त कहते है —

जय माता दी।

उत्तर 13. (क) वाई. डी पंत का आदर्श किशनदा थे। उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ थी।

<u>परंपरावादी</u> : किशनदा / कृष्णानंद पांडे एक परंपरावादी व्यक्ति थे। उन्होंने हमेशा अपने संस्कारों से जुड़के रहना उचित समझा। होली मनाना, जन्यू पुन्यों आदि देशीय त्योहारों में रुचि लेने वाले। वेश-भूषा में भी वह एकदम देसी थे। उनके अनुसार टाई-सूट पहनना आना चाहिए, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि अपना मूल धारणा धोती-कुर्ता है। उन्हें संध्या पूजा में गमच्छा पहने की आदत थी।

<u>धार्मिक व्यक्ति</u> : किशनदा अत्याधिक धार्मिक व्यक्ति थे। उन्होंने ढलते उम्र के साथ संध्या पूजा में अधिक समय बिताने का प्रयास किया; प्रवचन सुनना और पुस्तकें पढ़ना आदि उन्हीं के आदत थे जो यशोधर पंत ने भी अपनाया।

मार्गदर्शी : किशनदा यशोधर पंत के मार्गदर्शक थे। जब मैट्रिक पास होकर यशोधर पंत दिल्ली में आए तो उन्हें किशनदा के क्वार्टर में शरण मिला। किशनदा ने उन्हें रसोइया बनाकर रखा और फिर अपने ही नीचे सरकारी नौकरी दिलवाया। फिर जीवन के हर निर्णय में यशोधर पंत ने किशनदा के सिद्धांतों का उपयोग किया। मातहतों से व्यवहार, अपना घर न बनाकर रिटायरमेंट के बाद गाँव में पुश्तैनी घर में रहना; फिर नकली सी हँसी हँसना; गधा - पचीसी के दौर से गुजरना ऐसे हर कार्य में पंत ने किशनदा को आगे रखकर; उन्हीं के पटशिष्य और उत्साहीकार्यकर्ता होने का प्रयास किया

घ) ⁶कला की दृष्टि से हड़प्पा - सभ्यता समृद्ध थी। धातु-पत्थर की मूर्तियां, मृद्‌-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, पशु - पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरे; उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, केश - विन्यास, सुघड़ अक्षरों का लिपि - रूप सिद्ध करता हैं कि हड़प्पा वैज्ञानिक सिद्ध

न होकर कला सिद्ध था। उनमें आकार की भव्यता से ज्यादा कला की भव्यता है।

→ अजायबघर से मिली चीजों में ताँबे और काँसे के अनेक सुइयाँ मिली है। माना जाता है कि यह बारीक कशीदाकारी में इस्तेमाल किए जाते थे। खुदाई में हाथीदाँत भी मिले थे जो दरियाँ बुनने के लिए उपयोगदायी होता था। मुअनजोदड़ो के दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति के बदन पर दुशाला है; जो कला-बोध को उजागर करता है और इसके साथ ही छापे वाले कपड़े का भी यहाँ बहुत महत्व हैं।

→ यहाँ के वास्तुशिल्प में - दाढ़ी वाले नरेश के मुकुट से छोटी सिरपेंच तो मिलेगी ही नहीं; साथ ही इनके नावों की बनावट मिस्त्र के नावें जैसी ही थी पर आकार में छोटी। इससे कहा जा सकता है कि वह दिखावा था आंडबरहीन संस्कृति है जो लघुता में भी महत्ता अनुभव करती है। लो-प्रोफाइल संस्कृति थी।

3

उत्तर १२)

(क) लेखक के मराठी अध्यापक थे न.वा सौंदलगेकर मास्टर। उनके निम्नलिखित गुणों के कारण लेखक को उनके प्रति अपनापा महसूस होता था।

1) कविता पढ़ाने में निपुण : सौंदलगेकर मास्टर पढ़ाते समय स्वयं में रम जाते थे। सुरीला गला, छंद की बढ़िया चाल और रसिकता थी उनके पास। वह पहले कविता एकाध गाकर सुनाते और फिर हाव-भाव के साथ करके दिखाते थे। इसी कारण से लेखक भी कविता रचने में सफल हुए। वह खुद मास्टर के ही तरह ताल-गति और हाव-भाव से ढोर चराते, पानी लगाते वक्त कविता गाते थे।

२) आत्मविश्वास को बढ़ाने वाले : सौंदलगेकर मास्टर ने लेखक में छिपे प्रतिभा को समझकर उन्हें आत्मविश्वास प्रदान किया। विद्यालय के समारोह में और अन्य कक्षाओं में गाने का अवसर दिया। आनंदा को पुस्तकें और काव्य संग्रह देकर और कविता, छंद तथा

अलंकारों के शास्त्र को समझाकर उसके द्वारा लिखी गई कविता की प्रशंसा करते ।

(ख) भूषण के चरित्र के निम्नलिखित विशेषताएं है ।

(i) घमंडी पुत्र : भूषण को अपने डेढ़ हज़ार की नौकरी में बहुत घमंड था। वह घर में पिता के इजाज़त के बगैर आधुनिक उपकरण लाता है और उन पर सिर्फ अपना हक जमाता था। अपनी नौकरी के बलबूते पर वह पिता को कहता है कि एक नौकर रख लें और उसका तनख्वाह वह खुद देगा। वह अपने पिता से सम्मानपूर्वक व्यवहार नहीं करता। पिता के द्वारा किए जाने हर कार्य में अपनी राय बताते है।

(ii) रिश्तेदारों के प्रति उपेक्षा : भूषण मानवीय संबंधों को महत्व नहीं देता था। वह रिश्तेदारी को आर्थिक दृष्टि से तोलता है और अपने रिश्तेदारों की कोई सहायता नहीं करता है तथा अपने पिता को भी ऐसा करने से रोकते है। वह पारिवारिकता के महत्व को बिलकुल नहीं समझता

तथा फुरापापन पैदा करते हुए खुशहाली पाना चाहता है।

उत्तर।)

(क) बाज़ार जाते समय हमें निम्न बातों को ध्यान रखना चाहिए:

मन खाली न हो : बाज़ार जाते वक्त अपने ज़रूरतों को समझकर ; अपनी आवश्यकता को अपने पर्चेज़िंग पावर के अनुपात में तोलकर जाना चाहिए। इससे हमें बाज़ार की चमक दमक और फैंसी चीज़ों से आकृष्ट होने से बच सकते हैं।

मन में बाज़ार के प्रति नकारात्मक भाव न हो : बाज़ार में जाते वक्त, यह बहुत ज़रूरी है कि हम संतोषजनक होकर बाज़ार का लाभ उठाएं, यदि हम मन को शून्य बना डालेंगे तो समाज में भी हम नकारात्मक और दकियानूसी विचारधारा को जन्म देते हैं। यह अच्छे समाज के विकास का लक्षण नहीं है।

बाज़ार को सार्थकता प्रधान करना : बाज़ार को वही व्यक्ति सार्थकता को प्रदान करता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। हमें बाज़ार के चुंबकीय आकर्षण से बचे रहना होगा और अपनी आवश्यकता की पूर्ति करनी होगी। अगर हम बाज़ार में अपनी पर्चेजिंग पावर का प्रदर्शन करेंगे तो इससे सिर्फ कपट ; बाजारूपन बढ़ेगा और समाज में शोषण और सद्भावना की घटी होगी। ऐसा बाज़ार मानवता के लिए विडंबना है।

3

(ख) भक्तिन वाक्पटुता में बहुत आगे थी।

1) अपनी चोरी को स्वीकृत न करना : घर मे इधर-उधर पड़े पैसों को वह भंडार घर के मटकी में छिपा लेती थी और पूछने पर कहती है कि यह उसका अपना घर ठहरा। पैसे जो इधर-उधर पड़े मिला ; संभालकर रख लिया। इस प्रकार वह तर्क देती थी वह

2) उसके जीवन का परम उद्देश्य था मालकिन को खुश रखना। जिस चीज़ से उसकी मालकिन को क्रोध आ

सकता है ; उसे वह उधर - उधर करके बताती है ; और उसे झूठ नहीं मानती।

3) लेखिका को स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता, इसलिए उसने भक्तिन को रोका। लेकिन अपना समर्थन करते हुए शास्त्र से उदाहरण देती है और कहती है कि तीरथ गए मुँडाए सिद्ध।

4) लेखिका ने जब सभी कर्मचारियों को अंगूठे के जगह पर हस्ताक्षर डालने का नियम बनाया तो भक्तिन पढ़ाई-लिखाई से बचने के लिए कहती है - मालकिन तो सारे दिन किताब में डूबी रहती है अगर अब वह भी काम नहीं किया कैसे चलेगा।

3

(ग) लेखक के अनुसार सूखे के समय इंदर सेना पर पानी डालना निर्मम बर्बादी है। लेकिन उसके जीजी ने निम्नलिखित तर्क देकर उसका भ्रम दूर किया।

1) त्याग का महत्व : कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। अगर किसी के पास करोड़ों रुपया है और उसमें से दो-चार पैसे किसी को दें तो वह त्याग नहीं हुआ। त्याग तो वह है जो चीज़ अपने पास भी कम हो और दूसरों के कल्याण के लिए अपनी जरूरत को पीछे रखते हैं। त्याग वह है, और उसके बिना दान असंभव है, और सिर्फ उसी का फल मिलेगा।

2) पानी की बुवाई : जिस प्रकार तीस-चालीस मन गेहूं उगाने के लिए किसान अपने पास से पाँच-छह सेर अच्छा गेहूं ज़मीन में फेंक देता है, तो उसे बुवाई कहते हैं। पानी का इधर सेना पर फेंकना बुवाई है और इसे सारे गाँव में पानी वाले फसलें आएगी।

3) ऋषि-मुनियों का कथन : ऋषि मुनियों ने कहा कि पहले अपने पास से दो; तभी भगवान प्रसन्न होकर तुम्हें चौगुना और अठगुना करके लौटाएंगे।

(घ) सीमाएं तो सिर्फ धार्मिक, राजनैतिक तौर पर भौगोलिक विभाजन है। लेकिन इससे लोगों का अपने मातृभूमि के प्रति तनिक भी लगाव कम नहीं होता। तभी तो कहा गया है -

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि।

सिख बीबी का उदाहरण: भले ही सिख बीबी विभाजन के बाद पाकिस्तान में रहती नहीं हैं। लेकिन आज भी उनका मन अपने लाहौर में स्थित हैं। वहाँ के लोग, खाना, पहनावा उन्हें बहुत पसंद है और इसी वजह से वह सफिया को सौगात के तौर पर लाहौरी नमक लाने को कहती हैं

पाकिस्तानी कस्टम अफसर: वह दिल्ली को अपना वतन मानते हैं, और कहते हैं कि जामा मस्जिद की सीढ़ियों को उनका प्रणाम कहना।

हिन्दुस्तान के कस्टम अफसर: वह ढाका को अपना ज़मीन मानते हैं। और वहाँ के ज़मीन, पानी और डाभ की प्रशंसा करते हैं।

उत्तर 10) (क) लेखिका का अपने परिचितों के प्रति जितनी सम्मान की भावना थी; भक्तिन भी उन्हें उतना ही सम्मान देती थी। वह किसी को आकार-प्रकार से पहचानती है तो किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा।

(ख) कवियों के प्रति भक्तिन का ज्ञान बड़ा है; लेकिन आदर भाव नहीं। वह किसी की लंबे बाल और अस्त व्यस्त वेष-भूषा देखकर कह उठती है – और अवज्ञा प्रकट करती है – क्या वो कविता लिखता है; सिर्फ गली-गली घूमते फिरते हैं।

(ग) भक्तिन महादेवी वर्मा की आदर्श सेविका थी। इसलिए हर काम; हर निर्णय वह अपने मालकिन के अनुसार करती। महादेवी वर्मा का जितना आदर्श-भाव अपने परिचितों के प्रति था वही भक्तिन का उनके प्रति है। वह हमेशा अपने मालकिन से कदम मिलाए चलना चाहती थी।

(घ) लेखिका ने भक्तिन का संवाद देहाती भाषा में किया है; जिससे ग्रामीण परिवेश का परिचय मिलता है। भक्तिन लेखिका को देहाती बनाने में सफल जरूर हुई पर अपने में कभी कोई परिवर्तन नहीं ला सकी।

उत्तर 9)

(क) कविता की उड़ान/खिलना : कविता की उड़ान भावों, विचारों, संवेदनाओं; जिज्ञासा का है जो लौकिक और अलौकिक जगत दोनों में है; कविता का विचरण कालजयी है; उसकी कोई सीमा नहीं होती; उसके खिलने पर सदा ही वह सुगंध बिखेरता रहता है और पाठकों के मन में अमिट छाप छोड़ जाता है।

चिड़िया की उड़ान : चिड़िया की उड़ान कालातीत और सीमातीत है। वह कुछ क्षण के बाद थक जाती है और और लो और उसकी उड़ान में निरंतरता भी नहीं है।

फूल का खिलना : फूल का खिलना और खुशबू बिखेरकर आनंद प्रदान करना सिर्फ कुछ क्षणों के लिए है, उसके बाद उसकी ताज़गी समाप्त हो जाती है और उसका प्रस्फुरण शक्ति खोकर कुम्हला जाते हैं।

3

(ख) बच्चों को कपास की तरह कोमल पैरों को बेचैन इसलिए कहा है :

कपास यहाँ प्रतीकात्मक शब्द है जो निर्मलता, पवित्रता और स्वच्छता, चंचलता, कलंक रहित है। साथ ही बहुत ही कोमल और नाज़ुक है। बच्चों में यह सारे गुण है। पतंग उड़ाते वक्त वह छतों पर बेचैन होकर दौड़ते हैं। पतंग उनके रंगीन सपना है, वह ऊँचाइयाँ है जिसे वह प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे में छतों में जब वह खड़े रहते हैं तो गिरने की आशंका भी उन्हें नहीं सताती। पतंग का डोर उन्हें थाम लेती हैं। वह अपने असीम कल्पनाओं

में लिप्त है और ऐसे में वह भी अपने शरीर को डोर के अनुसार संतुलित रखते हैं।

उत्तर८)

(क) 1) काव्यांश में रूपक अलंकार की छटा है; कृषि-कर्म के रूपक में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने का प्रयास है।

2) गल गया - अनुप्रास अलंकार है
'ग' वर्ण की आवृत्ति
पल्लव-पुष्पों - अनुप्रास अलंकार
'प' वर्ण की आवृत्ति

(ख) जब खेत में बोए गए बीज रसायनिक खादों और वातावरण के सहारे विकसित होकर अपना मूल रूप खो लेते हैं, उसी प्रकार भावनात्मक आँधी से पन्ने पर बोए गए बीज कल्पना की शक्ति का सहारा लेकर

विकसित होते है और स्वयं उस प्रक्रिया में विगलित होते हैं। फिर वह फसल बड़ा होकर पुष्पों और फूलों से अपना पूर्ण विकास प्राप्त करता है। उसी प्रकार काव्य - रचना भी अपना स्वरूप ग्रहण करती है और भावों, अनुभूतियों और संवेदनाओं से भरपूर हैं।

(ग) 1) भाषा सरल सहज संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली हैं।
2) अनुकांत है
3) रूपक अलंकार / अनुप्रास अलंकार की छटा है
4) भाषा में प्रतीकात्मकता है
5) वर्णात्मक बिंब योजना है।
6) भाषा में शालीनता है।

उत्तर 7)

(क) कवि ने लोगों की जीविकाविहीनता का मार्मिक चित्रण किया है। लोगों के पास कोई नौकरी ही नहीं थी। किसान को न खेत, भिखारी को न भीख, बनिक को बनिज नहीं और चाकर को चाकरी नहीं।

(ख) कवि ने रावण की तुलना भयावह गरीबी और अभावग्रस्त जीवन से किया है। कवि कहने के लिए विवश है कि सारे संसाधनों को रावण ने अपने कब्जे में रखा है।

(ग) कवि का कहना है कि विपत्ति के समय प्रभु श्रीराम स्वयं आकर भक्तों के संकटों को दूर करते हैं। इसलिए ही वह भगवान राम से याचना करते हैं कि वह अपने भक्तों की प्रार्थना को सुनें।

घ) तुलसी को हाय हाय कहने की नौबत उस समय के प्रकृति और प्रशासन से बेरुख के कारण होगी। जिसके कारण ज़मीन नहीं, आर्थिक तंगी ने लोगों के लिए जीना दूभर कर दिया। अधिकारियों का भ्रष्ट प्रशासन भी इसका एक कारण रहा होगा।

उत्तर 6) भ्रष्टाचार का दानव

एक सरकारी कार्यालय का दृश्य को देखें तो आम आदमी का शायद सरकार के कार्य प्रणाली से ही विश्वास उठ जाएगा। फाइल पर वज़न रखना, चढ़ावा, मुँह मीठा कराना ही तो यहाँ की दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। मेरा मत; यह और कुछ नहीं भ्रष्टाचार नाम लोगों के जीवन को खोखला करने वाली दीमक के विपन्न रूप हैं। हे राम!

हमारे सदियों से अर्जित मूल्यों का क्या होगा? चरित्र ही तो है जो मानव जीवन का श्रृंगार है। सदाचार ही तो है जो स्वर्ग को ज़मीन पर उतारती है, लेकिन अफसोस है कि आज यही जीवन मूल्यों का धीरे धीरे ह्रास होता जा रहा है। भ्रष्टाचार रूपी राक्षस ने जीवन में विकराल रूप लिए खड़ा है? अगर इसका समाधान न निकाले तो फिर राम ही जाने इस देश के जनता का क्या होगा?

भ्रष्टाचार के अनेक कारण हैं; समाज में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी जो लोगों को प्राथमिक सुविधाएँ भी प्रदान नहीं करती; फिर तो यह विवश है पवित्रता के मार्ग से हटने के लिए। दूसरा है अधिक धन कमाने के लालसा। लोगों में लालच का भूत इस कदर सवार होता है कि वह नैतिक मूल्यों की चिंता का अपने जान की बाजी चढ़ाकर पैसे कमाना चाहता है। तीसरा है लोगों में समाज में प्रतिष्ठा पाने की मानसिकता। एक दूसरे की गला घोटकर वह अपने स्वार्थ को पूरा करना चाहता है।

भ्रष्टाचार के इस तरह बढ़ावे से समाज में अशांति फैलती है; मासूम और निरीह जनता इसका शिकार बनते हैं। राजनेता सड़के; बनवाने पुलो का निर्माण करने का जनकल्याण का वायदा देकर अपनी आत्मकल्याण में लगे हुए हैं। व्यापारी वर्ग अधिक लाभ कमाने के उद्देश से मुनाफाखोरी, कालाबाजारी आदि में सम्मिलित है। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पदार्थों से मिलावट की जाती है और तो और मानव-अंगों का व्यापार भी बड़े स्तर पर हो रहा है।

भ्रष्टाचार का शीघ्रातिशीघ्र जड़मूल से उखाड़कर फेंकना हमारे समाज के बढ़ोत्तरी और उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है। विद्यार्थी ही इस देश के भावी नागरिक हैं। इसलिए विद्यालयों में पाठ्य प्रणाली में नैतिक शिक्षा भी अनिवार्य किया जाना चाहिए जिससे बचपन से ही बच्चों में सदाचार के बीज बोए जा सकते हैं। कानून और व्यवस्था को अधिक कठोर बनाना होगा ताकि एक भी अपराधी बच न

सके। संचार माध्यम भी इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। धारावाहिक, फिल्मों के द्वारा भ्रष्टाचार के कुपरिणाम को दर्शा सकते हैं।

इस राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब भ्रष्टाचार का उन्मूलन होगा और इसके लिए सरकार और जनता का प्रयास और योगदान बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उत्तर25) (क)

(i) मुखड़ा किसी समाचार का प्रारंभ अनुच्छेद या महत्वपूर्ण भाग है जिसमें क्या, कब, कौन, कहाँ आदि जानकारियाँ होते हैं। इसे इंट्रो भी कहते हैं।

(ii) किसी खास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में जनमत आकर्षण करने के लिए लगातार अभियान चलाने को एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।

(iii) किसी खास समस्या या घटना पर संपादक द्वारा लिखा गया वैचारिक लेखन संपादकीय है।

(iv) किसी समाचार के प्रकाशन या प्रसारण के लिए निर्धारित समय सीमा डेड लाइन है।

(v) 1) फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक, आत्मनिष्ठ लेखन है
2) इसकी कोई शैली या शब्द सीमा नहीं होती।
3) फीचर में लेखक को अपने विचार प्रकट करने का मौका मिलता है।

(ख) हताशा में आशा की किरण युवा

युवा शक्ति शब्द शक्ति है। वर्तमान भारतीय समाज अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। असमानता, गरीबी, बेरोजगारी, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, जनसंख्या विस्फोट आदि। इन समस्याओं को दूर करके समाज की ऐसी स्थापना

करना जिसमें प्रत्येक प्राणी सुखी से जी सके। तभी एक सच्चे समाज की स्थापना हो सकती है।
ऐसे समाज निर्माण का कार्य अत्यंत बल, समर्पण, इच्छाशक्ति की माँग करता है और यह सभी गुण युवा में हैं। युवा ही इस राष्ट्र की रीढ़ है जो हर विषम परिस्थिति में डटकर मुकाबला करता है।

कई उदाहरण जहाँ युवाओं ने निराशा के समय आशा के दीप जलाए थे। महात्मा गाँधी, महाराणा प्रताप, चंद्रगुप्त मौर्य, गौतम बुद्ध, श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि यह महान व्यक्ति हैं जो एक सच्ची समाज स्थापना में योगदान दे चुके हैं।

योगदान के तौर पर युवा अभियान चला सकते हैं जिससे आज समाज में उपस्थित समस्याओं को लोगों तक पहुँचा सकेंगे और हम उसमें अपना योगदान दे सकेंगे। युवा यानी परिवर्तन की क्षमता रखने वाला है। इसलिए लोगों में ज्ञान फैलाना की कैंची

समस्याओं को मुकाबला कर सकते हैं। युवा तो विध्वंस का रस्ता नहीं; स्वयं उसे आचरण में लाकर दूसरों को उपदेश देकर उन्हें समझाना चाहिए। स्कूल तथा कॉलेज में नशा उन्मूलन के विविध कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं; नाटक, फिल्म आदि बनाकर जनमानस तक पहुँच सकते हैं।

युवा तभी इस राष्ट्र की सेवक बनेगा जब वह खुद बुराइओं से दूर रहे और अच्छी उदाहरण और मार्गदर्शक बने।

उत्तर 1.

सेवा में,
संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली।

दिनांक : 13 मार्च 2015

विषय : चिकित्सा-सुविधाओं का अभाव हेतु

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित समाचार पत्र के माध्यम से अधिकारियों का ध्यान गाँवों में चिकित्सा-सुविधाओं के अभाव की ओर आकृष्ट करना चाहती हूँ। आशा है कि आप इसे प्रकाशित कर अनुग्रहित करेंगे।

मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है के गाँव में अस्पतालों की सुविधाएँ तथा चिकित्सा व्यवस्थाओं की बड़ी दयनीय स्थिति है। प्राथमिक समस्या तो यह है

कि अस्पतालों में चिकित्सक तो आवश्यकता के समय उपस्थित ही नहीं रहते। वह अपने निजी कार्यों में व्यस्त रहते हैं। दूसरा यह कि सिर्फ प्राथमिक सुविधा जैसे खून का जाँच, प्रैशर का जाँच, पिशाब आदि के टैस्ट भी उपलब्ध नहीं हैं। यहाँ मरीज तो दमघोंटू वातावरण में एक बिस्तर में तीन रोगी जैसी संख्या में हैं। साफ-सफाई किए तो यहाँ महीने हो चुके हैं। यहाँ जो मरीज आते हैं; इस वातावरण में रहकर उनकी स्थिति और दयनीय हो जाती है। गर्भवती स्त्रियों को मीलों दूर चलकर अपनी जाँच के लिए शहर जाना पड़ता है।

मेरा विचार से यह अधिकारियों का ही लापरवाही है। इसलिए गाँव में डॉक्टरों को नियमित किया जाना चाहिए और अकस्मात निरीक्षण भी जरूरी है। अस्पतालों में आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध की जानी चाहिए। गरीब लोगों में दवा मुफ्त में बाँटना चाहिए।

मेरा अधिकारियों से सविनय अनुरोध है कि वह इन समस्याओं को ध्यान रखकर समुचित कदम उठाएं।

धन्यवाद सहित
भवदीय
क ख ग
नईदिल्ली।

उत्तर 3) नारी तुम केवल श्रद्धा हो

प्रस्तावना: नारी ही तो समाज की वह महत्वपूर्ण कड़ी है जो मानवजाति की निरंतरता को बनाए रखती है। नारी स्नेह समर्पण, त्याग, कोमलता की प्रतिमूर्ति है। नारी को समय के अनुसार विविध दौर से गुजरना पड़ा है। नारी ही वह डोर है जो समाज को एकता के कड़ी में बांध देती है।

विषयवस्तु

आर्य समाजी काल में तो नारी को बहुत महत्व दिया गया। उसे घर की देवी माना गया। घर में उसी का राज था। समाज सेवा में भी वह बहुत सहयोग देती थी।

मध्यकाल में नारी का अस्तित्व ही खो गया। उसे पुरुष वर्चस्व समाज में जंजीरों में बाँध दिया गया। उसे पर्दे के पीछे रहना पड़ा। नारी तो सिर्फ एक विलासिता की वस्तु या बच्चे पैदा करने वाली मशीन या सिर्फ पुरुष के दासी के समान माना गया। उसके सभी अधिकार छिने गए और यहाँ तक की उसका जन्म अपशकुन माना गया था।

2013

आधुनिक काल में नारी प्रगति के पथ पर चल रही है। वह पुरुष के पैरों की जूती न होकर, वह सिर्फ और सिर्फ आत्मनिर्भर और आत्मसम्मान के हकदार ही नहीं बल्कि वह आज हर क्षेत्र में अपना प्रतिभा साबित कर रही है। वह आज ऊँचाइओं को छूम रही है।

आज वह राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इसलिए ही तो कहा गया है ' अगर एक पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है पर एक नारी के शिक्षित होने से पूरा समाज शिक्षित होता है।

इसलिए ही नारी को उसके हक का सम्मान मिलना अनिवार्य है। नारी भले है प्रकृति नियम के अनुसार शारीरिक रूप से कमजोर क्यों न हो लेकिन वह चिकित्सा, शिक्षा, कला; हर क्षेत्र में सजीव है।

भारतीय संस्कृति में ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ नारी को सहधर्मिणी मानकर उसे सम्मान दिया हो; शिव - पार्वती, राधा - कृष्ण, राम सीता आदि।

उपसंहार : इसलिए इस समाज का फर्ज है कि नारी को सम्मान दे; उसके प्रति हो रहे अत्याचारों पर एक विराम लगाए औ और उसे समाज सेवा का मौका दें।

विषय

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पदतल में
पीयूष स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में'।

2013

उत्तर।

(क) न्यायपालिका की भूमिका

(ख) न्यायपालिका का विशेष महत्व होता है क्योंकि न्यायपालिका ही है जो आइना दिखाती है। वह ही तो है समाज में हो रहे अन्याय और अत्याचारों में विराम डालने का निर्णय लेती है

(ग) आइना दिखाने का तात्पर्य है समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करके; गड़बड़ियों का पर्दाफ़ाश करना; और न्याय दिलाना।

(घ) चेहरे की विद्रूपता से तात्पर्य है समाज में हो रहे अन्यायों को ; अन्यायियों का पर्दाफ़ाश करके उनमें सुधार लाना। यह कोई भी है जो अन्याय; नीति के विरुद्ध पथभ्रष्ट होकर कार्य करता है। यहाँ भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की ओर संकेत है।

(ङ) राजनीतिक - दलगत स्वार्थ या निजी हित के आड़े आ जाते हैं और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है।

(च) जब कोई न्यायालय ऐसे है जो फैसला समाज कल्याण के लिए लेते हैं और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते तो उसमें आशा की किरण दिखाई देती है।

(छ) अगर जनता पर राजनीतिज्ञों का अन्यायपूर्ण व्यवहार चलता ही रहे तो न इस समाज की सुधार हो सकती है और न राष्ट्र की इसलिए वह अंधकार के गड्ढे में गिर जाता है।